आर.एन.आई.नं. RAJBIL/2010/52404

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

सेवा सौभाग्य

पू. कैलाश जी 'मानव' | मूल्य » 5 | वर्ष » 13 अंक » 159 | मुद्रण तारीख » 1 मार्च 2025 | कुल पृष्ठ » 24

पैरों से जीवन साथी को धर्मराज वरमाला पहना रहे है

संस्थान द्वारा आयोजित 43वां दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह सम्पन्न

चलेंगे
अपनों
के संग
दिव्यांगों को अपना
अमूल्य सहयोग प्रदान करें
Donate via UPI
₹10000
narayanseva@sbi
अधिक जानकारी
हेतु सम्पर्क करें
+91 294 662 2222
+91 7023509999

सेवा सौभाग्य

मुद्रण तारीख » 1 मार्च 2025
कुल पृष्ठ » 24

मूल्य » 5 वर्ष » 13 अंक » 159

सम्पादक मंडल

मार्ग दर्शक » कैलाश चन्द्र अग्रवाल
सम्पादक » प्रशान्त अग्रवाल
सहयोग » विष्णु शर्मा हितैषी
भगवान प्रसाद गौड़
डिजाइनर » विरेन्द्र सिंह राठौड़

सम्पर्क (कार्यालय)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva

Sewa Parmo Dharm
MAKE GIVING YOUR HABIT

483, 'सेवाधाम' सेवा नगर,
हिरण मगरी, सेक्टर-4,
उदयपुर (राज.) 313002, भारत
फोन नं. +91-294-6622222,
वाट्सऐप: +91-7023509999
Web www.spdtrust.org
E-mail info@spdtrust.org

Seva Soubhagya Print Date 1 March, 2025 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404 Postal Reg. No. RJ/UD/29-146/2023-2025. Despatch Date 1st to 7th of every month, Chetak Circle Post Office, Udaipur, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur - 313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages- 24 (No. of copies printed 1,50,000) cost- Rs.5/-

CONTENTS

इस माह में

होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं
सम्मानित पाठक बन्धुओं के लिए

वर्तमान का रंग, सुखद भविष्य की तस्वीर नई राह, नया साथ प्रेम से संवरें जीवन

मजबूरी नहीं, मजबूती की मिसाल

हौसलों ने रची अनूठी प्रेम कहानी

प्रयागराज में दिव्यांग कल्याण शिविर

गतिमान हुए ठहरे कदम

सब एक दूसरे के सहायक

जब मुश्किलें किसी के रास्ते का रोड़ा बनती हैं तो सफलता-समृद्धता पर भी प्रश्न चिन्ह लग जाता है। कठिनाइयां तो जीवन में आती ही रहेंगी, पग-पग पर उनसे सामना होगा।

पृथ्वी पर कोई ऐसा न हुआ और न होगा, जिसे मुश्किलों का सामना न करना पड़ा हो। बावजूद इसके वे परस्पर सहयोग व आत्म विश्वास से आगे बढ़े और लक्ष्य अर्जित किया। जब मनुष्य कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों के आगे घुटने टेक देता है, तभी उसकी प्रगति के रास्ते में अवरोध खड़ा हो जाता है। आत्म विश्वास ही सफलता की कुंजी है। यही वह गुण है, जो उत्तरोत्तर प्रगति के मार्ग को इंगित करता है। कठिनाइयां और प्रतिकूल परिस्थितियां भी उसे ही पराजित करती हैं, जो आत्म विश्वास और इच्छा शक्ति को जागृत नहीं कर पाता। आत्म विश्वासी और परिश्रमी व्यक्ति ही आत्म निर्भर बन सकता है। संस्थान में रोजाना ऐसे भाई-बहिन आते हैं। जिन्होंने किसी हादसे में अपने हाथ-पांव खो दिए अथवा जन्मजात दिव्यांगता के शिकार होकर घिसटते आए। लेकिन उनमें से अधिकतर में गजब का आत्म विश्वास देखा गया। संस्थान में कृत्रिम अंग पाकर अथवा दिव्यांगता सुधार सर्जरी से वे अपने पांवों पर खड़े हुए और यहीं रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण प्राप्त कर जीवन को स्वावलम्बी भी बनाया। संस्थान का उद्देश्य है कि सेवाभावी दानवीर सज्जनों के सहयोग से निराश्रित, दिव्यांग एवं असहाय महानुभावों की न केवल अन्न, वस्त्र, चिकित्सा आदि से सहायता की जाए बल्कि उन्हें कमाकर खाने की दिशा में भी प्रवृत्त किया जाए। देश-विदेश में ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने दिव्यांगता अथवा गरीबी के बावजूद देश का नाम भी रोशन किया। एक-दूसरे की सहायता से ही सुखी एवं सम्पन्न समाज का निर्माण संभव है। प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे का सेवक है।

अफ्रीका में कमेरा के अभिमानी राजा ने एक दिन दरबार में कहा-आप सब मेरे सेवक हैं। एक बुद्धिमान वृद्ध दरबारी ने कहा-'मैं आपकी बात से सहमत नहीं हूं। हम सभी परस्पर एक-दूसरे के सेवक हैं।' राजा तिलमिला कर बोला-इसका मतलब मैं तुम्हारा सेवक हूं। इसे शाम ढलने तक सिद्ध करो अन्यथा कड़ा दण्ड दिया जाएगा। सिद्ध कर दिया तो मालामाल कर दूंगा। वृद्ध अपनी छड़ी लेकर ज्यों ही दरबार से जाने वाला था कि एक भिखारी वहां आ पंहुचा। वृद्ध दरबारी ने अपने झोली में हाथ डालकर कुछ मुद्राएं उसे देनी चाही, इसी प्रयास में उसकी छड़ी नीचे गिर पड़ी। राजा ने तुरन्त उसे उठाकर दे दी। तभी वृद्ध दरबारी ठहाका लगा हंसने लगा। सभी उसके व्यवहार पर हक्का-बक्का थे। वृद्ध दरबारी ने कहा-महाराज अब तो आप मानेंगे कि सज्जन लोग एक-दूसरे के सेवक होते हैं। मैंने भिखारी की सेवा की और आप छड़ी उठाकर मेरी सेवा में प्रवृत्त हो गये। वृद्ध ने कोई भी पुरस्कार लेने से इनकार करते हुए राजा से भिखारी की पर्याप्त सहायता का अनुरोध किया।

सेवक प्रशांत भैया

दान का चरमोत्कर्ष

समर्थ ने कहा-शिवबा! सब तो मुझे दे दिया, अब तुम क्या करोगे।' शिवा बोले श्री की सेवा, सेवक को आज्ञा प्रदान करें।' समर्थ बोले- 'तो फिर उठाओ मेरी यह झोली और चलो भिक्षा मांगने।'

बात सन 1656 की है। राष्ट्र गौरव शिवाजी महाराज रायगढ़ से चलकर सतारा के किले में आकर निवास कर रहे थे। एक दिन जब वह राजवाड़े में बैठे राज्य के विभिन्न महकमों के अधिकारियों से बातचीत कर रहे थे, तभी नीचे से 'जय-जय रघुवीर समर्थ!' की आवाज उन्हें सुनाई दी। शिवाजी तत्काल नीचे उतरे। देखा साक्षात गुरूदेव भिक्षा की झोली लिए खड़े हैं। उन्होंने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया और भिक्षा लाने के लिए भीतर गए। भिक्षा के लिए अन्न-वस्त्र, सोना- चांदी, मणि-माणिक्य जो भी उठाते उन्हें थोड़ा ही जंचता। एकाएक उन्होंने कलम को दावत में डुबोकर पर्ची पर कुछ लिखा और बाहर आए। गुरू समर्थ ने झोली पसारी और शिवा ने उसमें वह पर्ची डाल दी।

गुरू समर्थ ने कहा- 'शिवबा! अरे, हम तो तुम्हारे द्वार आज के भोजन के लिए पर्याप्त धान्य की आशा से आए थे, पर तुम तो कागज का टुकड़ा झोली में डालकर हमसे ठिठोली कर रहे हो। मुट्ठी भर आटा ही डाल देते तो उसकी रोटी तो बनाकर खा सकते थे।'

महाराज! झोली में मैंने भिक्षा ही डाली है और कुछ नहीं, क्षमा करें।' शिवा ने विनय के साथ कहा। गुरू समर्थ ने अपने साथ चल रहे शिष्य उद्धव से पर्ची निकाल कर पढ़ने को कहा। उद्धव पर्ची पढ़ने लगा-'आज तक अर्जित संपूर्ण राज्य स्वामी के चरणों में समर्पित।' शिवराज और राजकीय मुद्रा भी।' समर्थ ने कहा-शिवबा! सब तो मुझे दे दिया, अब तुम क्या करोगे।' शिवा बोले श्री की सेवा, सेवक को आज्ञा प्रदान करें।' समर्थ बोले- 'तो फिर उठाओ मेरी यह झोली और चलो भिक्षा मांगने।' भिक्षुक शिवराज को लेकर समर्थ ने गांव भर में भिक्षा मांगी। लोग आश्चर्य चकित थे। नदी के तट पर गुरू-शिष्यों ने रसोई बनाई और भगवान को भोग लगाकर भोजन किया। इसके बाद समर्थ बोले-'शिवबा! हम वैरागियों का राज्य से क्या काम? तुम ही इसे संभालों।' शिवाजी तैयार ही न हुए। तब गुरू समर्थ ने झोली से भगवा वस्त्र ध्वज के लिए और पादुकाएं शिवाजी को प्रदान करते हुए कहा कि मेरे प्रतिनिधि स्वरूप इस राज्य को चलाओ। शिवाजी ने आजीवन उनके आदेश का निर्वाह किया।

यदि दान में समर्पण का भाव है तो वह कल्याण में ही फलित होता है। शिवाजी महाराज आज भी विश्व के इतिहास में अपनी वीरता और सुशासन के लिए अमर हैं।

पूज्य श्री कैलाश 'मानव'

वर्तमान का रंग सुखद भविष्य की तस्वीर

यह कहानी न केवल हिमांशु के संघर्ष की है, बल्कि उस सपने की भी है जिसे संघर्ष के बावजूद पूरा किया जा सकता है। जन्मजात दिव्यांगता के कारण हिमांशु को जीवन के पहले वर्षों से ही शारीरिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। पांव तिरछे मुड़े होने के कारण वह पंजों के बल चलने को मजबूर था और इसके बावजूद उसके मन में कभी हार मानने का ख्याल नहीं आया।

हिमांशु के माता-पिता ने गरीबी के बावजूद उसे उपचार दिलाने की भरसक कोशिश की, लेकिन सफलता कहीं नहीं मिल रही थी। तब अचानक उन्हें आगरा में एक संस्थान के कैलिपर्स माप शिविर की जानकारी मिली। बिना समय गवाएं, उन्होंने पंजीयन करवाया और हिमांशु के दोनों पांवों का नाप लिया।

19 जनवरी 2025 को वह दिन आया जब हिमांशु ने संस्थान के फिटमेंट कैंप में अपने नये कैलिपर्स लगाए। यह न सिर्फ हिमांशु के लिए, बल्कि उसके परिवार के लिए भी एक नई आशा की किरण बन गया। हिमांशु ने कहा, मेरे वर्तमान के कैनवास पर संस्थान ने सुनहरे भविष्य की इबारत लिख दी। अब मैं नहीं रूकूंगा और अपने दोस्तों के साथ स्कूल में खेलूंगा भी।

इस सफलता के बाद हिमांशु के परिवार ने भी संस्थान का आभार व्यक्त किया, जो न केवल हिमांशु की जिंदगी को बदलने में मददगार साबित हुआ, बल्कि पूरे परिवार की उम्मीदों को भी पंख लगा दिए। यह कहानी एक प्रेरणा है कि अगर इच्छाशक्ति मजबूत हो, तो कोई भी मुश्किल राह बाधा नहीं बन सकती।

संस्थान ने मेरी डूबती नैया को बचा लिया

उत्तर प्रदेश के बरेली शहर के रहने वाले पुष्पेंद्र दिवाकर (26) एक निजी अस्पताल में कंपाउंडर हैं।

वर्ष 2017 में एक दुर्भाग्यपूर्ण ट्रेन हादसे में उन्हें गंभीर चोटें आईं। इस दुर्घटना ने उनकी जिंदगी को पूरी तरह बदल दिया। इलाज के दौरान उनके दाएं पैर के पंजे को काटना पड़ा, लेकिन दर्द और संघर्ष यहीं खत्म नहीं हुआ। तीन महीने बाद, गैंग्रीन की आशंका के चलते उन्हें घुटने तक का पैर कटवाना पड़ा।

इस दुर्घटना के बाद पुष्पेंद्र के लिए चलना-फिरना बेहद मुश्किल हो गया। एक साधारण से काम के लिए भी उन्हें दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था। यह स्थिति उनके आत्मविश्वास को तोड़ रही थी और वे धीरे-धीरे अवसाद के गहरे अंधेरे में डूबने लगे।

आशा की एक किरण

इसी कठिन दौर में उन्हें अपने ही शहर में नारायण लिंब मेजरमेंट शिविर के बारे में पता चला, जो निशुल्क कृत्रिम अंग प्रदान करता है। उन्होंने तुरंत वहां संपर्क किया, और संस्थान ने उनके कटे पैर का माप लेकर उनके लिए एक विशेष मॉड्यूलर लिंब तैयार किया।

जब पुष्पेंद्र ने पहली बार इस कृत्रिम पैर को पहना, तो उनकी आंखों में चमक लौट आई। यह सिर्फ एक कृत्रिम अंग नहीं था, बल्कि उनकी जिंदगी में एक नई शुरूआत थी। अब वे बिना सहारे के चल सकते हैं, अपने काम पर जा सकते हैं और आत्मनिर्भर जीवन जी सकते हैं।

नई राह, नया साथ प्रेम से

संस्थान ने फिर रचाई खुशियों की बारात 49 दिव्यांग एवं निर्धन जोड़ों का सामूहिक विवाह सम्पन्न

नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ में 9 फरवरी 2025 को 43वें निर्धन एवं दिव्यांग सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन हुआ, जहां 49 जोड़ों ने सात फेरों के साथ जीवनभर के बंधन में बंधने का संकल्प लिया। यह आयोजन 8-9 फरवरी को विनायक स्थापना के साथ प्रारंभ हुआ और हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस पवित्र अवसर पर संस्थान के संस्थापक पूज्य श्री कैलाश जी 'मानव', सह -संस्थापिका श्रीमती कमला देवी जी, संस्थान अध्यक्ष 'सेवक' प्रशांत भैया जी, निदेशक श्रीमती वंदना जी और विदेशों से आए विशेष अतिथियों ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

खुशियों के रंगों में महकी हल्द-मेहंदी: राजस्थान की पारंपरिक संस्कृति के

संवरें जीवन के सात वचन

अनुसार, विवाह से पहले हल्दी और मेहंदी की रस्म धूमधाम से निभाई गई। परिवारजनों और कन्यादानियों ने पारंपरिक गीतों की मधुर धुनों पर नृत्य किया। 'हल्दी लगाओ री, तेल चढ़ाओ री, बन्नी का गोरा बदन दमकाओ री...' 'मेहंदी को रंग सुरंग निपजे मालवे जी...' इस रस्म में हर कोई खुशी से झूम उठा, जबकि वर-वधू को हल्दी-मेहंदी लगाई गई।

दिव्यांग जोड़ों की अनूठी बिंदोली

अगले दिन, प्रातः 9 बजे शहनाई और बैंड-बाजे के साथ वर-वधू की बिंदोली निकाली गई, जिसमें घराती और बाराती नृत्य करते हुए चल रहे थे। पूरे मार्ग में पुष्पवर्षा होती रही, जिससे माहौल आनंदमय हो गया। श्रीनाथ जी की पावन छत्रछाया में जब दुल्हनें विवाह मंडप में पहुंचीं, तो वातावरण भावनात्मक और श्रद्धामय हो गया।

मंगलकामनाएं

पूज्य गुरूदेव मानव जी व कमला देवी जी ने सभी 98 को आशीर्वाद दिया व उनके भावी जीवन की मंगलकामनाएं की। इस अवसर पर धर्म माता-पिता और कन्यादानियों का अभिनंदन भी किया गया। इस दिन की सुहानी शाम भी ढोलक की थाप पर महिला संगीत और नृत्यों से धमक उठी।

जब दिव्यांग हाथों ने निभाई वरमाला की रस्म

विवाह मंडप में दूल्हों ने तोरण की रस्म निभाई और फिर वैदिक मंत्रों के साथ वरमाला का आयोजन हुआ। इस दौरान भावुक करने वाले कई दृश्य सामने आए-

◆हाथों से अपंग धर्मदास ने पैर की उंगलियों से अपनी वधू रेशमा के गले में वरमाला डाली।

◆कुछ दिव्यांग वर-वधू व्हीलचेयर पर बैठकर वरमाला की रस्म निभाते दिखे।

संस्थान का संकल्प: दिव्यांगों को आत्मनिर्भर बनाना

इस समारोह में उन युवाओं को भी मंच पर बुलाया गया, जिन्होंने हाल ही में संस्थान की सहायता से कृत्रिम अंग प्राप्त किए हैं। इन लोगों ने न केवल अपने संघर्ष की कहानी साझा की बल्कि मंच पर चलकर दिखाया कि अब वे आत्मनिर्भर जीवन की ओर बढ़ चुके हैं।

संस्थान ने संबल दिया

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा, दिव्यांगों का सशक्तिकरण हमारे समाज और राष्ट्र के विकास का आधार है। हम इन्हें केवल नया जीवन ही नहीं बल्कि आत्मनिर्भरता भी देना चाहते हैं।

संस्थान के संस्थापक पूज्य कैलाश जी 'मानव' और सहसंस्थापिका कमला देवी जी ने सभी नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद दिया और सुखमय दांपत्य जीवन की कामना की।

अब तक 2,457 निर्धन एवं दिव्यांग जोड़ों की गृहस्थी बसी

इस आयोजन के साथ, संस्थान ने अब तक 2,457 निर्धन एवं दिव्यांग जोड़ों का विवाह कराकर उन्हें गृहस्थ जीवन में प्रवेश कराया है। विवाह पश्चात, प्रत्येक जोड़े को गृहस्थी का आवश्यक सामान और दुल्हनों को आभूषण भेंट किए गए।

जब विदाई में छलक उठीं आंखें...

पाणिग्रहण संस्कार के उपरांत, जब बेटियों को उनके नए जीवनसाथी के साथ डोली में बैठाया गया तो पूरे वातावरण में भावनात्मक लहर दौड़ गई। परिजनों और कन्यादाताओं की आंखें छलक पड़ीं, जिन्होंने प्रतीकात्मक रूप से उनकी डोली उठाकर उन्हें विदा किया। इस भावनात्मक और प्रेरणादायक आयोजन ने एक बार फिर साबित कर दिया कि समाज की भलाई के लिए किया गया एक प्रयास हजारों जिंदगियों में खुशियों के रंग भर सकता है।

मजबूरी नहीं, मजबूती की मिसाल

जब दो दिव्यांग बने एक-दूजे के पूरक

छत्तीसगढ़ के सक्ती जिले के किरकर गांव की हेम कुमारी और गुजरात के अहमदाबाद के सुभाष धोबी दोनों की जिंदगी व्हीलचेयर तक सीमित थी, लेकिन उनकी हिम्मत और प्यार ने उनकी दुनिया को नई राह दिखा दी।

दिव्यांगता बनी तकदीर

हेम कुमारी की जिंदगी एक आम बच्ची की तरह चल रही थी, लेकिन तीन साल की उम्र में एक मामूली बुखार ने उसकी तकदीर बदल दी। इलाज के दौरान एक इंजेक्शन के दुष्प्रभाव ने उसके दोनों पैरों को बेकार कर दिया। उधर, सुभाष धोबी जन्म से ही पोलियो से ग्रसित थे, लेकिन उन्होंने इसे अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया।

सुभाष का संघर्ष और सफलता

सुभाष न सिर्फ गुजरात की व्हीलचेयर क्रिकेट टीम के खिलाड़ी हैं, बल्कि वे ऑनलाइन मार्केटिंग भी करते हैं। अपनी मेहनत और लगन से उन्होंने अपने पैरों की कमी को कभी अपनी राह का रोड़ा नहीं बनने दिया।

एक संयोग जो बना जीवन का सबसे खूबसूरत मोड़

एक दिन सुभाष की क्रिकेट टीम रायपुर में मैच खेलने आई। वहीं उनकी मुलाकात हेम कुमारी से हुई। पहली ही मुलाकात में दोनों के बीच एक खास रिश्ता बनने लगा। हेम ने सुभाष की हिम्मत देखी, तो सुभाष ने हेम की दृढ़ इच्छाशक्ति। दोस्ती बढ़ी और महज एक महीने में दोनों ने फैसला किया कि वे जीवनभर के साथी बनेंगे। जब उन्होंने अपने परिवारों से इस बारे में बात की तो पहले थोड़ी झिझक थी, लेकिन दोनों के हौसले और आत्मनिर्भरता को देखकर परिजनों ने भी इस रिश्ते को सहमति दे दी।

संस्थान बना प्रेम की डोर का साक्षी

हेम और सुभाष की यह प्रेम कहानी नारायण सेवा संस्थान के सामूहिक विवाह समारोह में विवाह के पवित्र बंधन में बदल गई। जब वे एक-दूजे का हाथ थामे सात फेरे ले रहे थे तो यह न सिर्फ उनके लिए, बल्कि वहां मौजूद हर किसी के लिए भावुक करने वाला पल था।

प्रेरणा बनी इनकी कहानी

हेम और सुभाष की यह कहानी सिर्फ एक प्रेम कथा नहीं, बल्कि हर उस दिव्यांग के लिए प्रेरणा है, जो सोचते हैं कि उनका जीवन अधूरा है। यह साबित करता है कि सच्चा साथी वह होता है जो आपकी कमियों को नहीं, बल्कि आपकी क्षमताओं को देखता है। यह कहानी सिर्फ सुभाष और हेम की नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति की है जो अपनी सीमाओं को अपनी ताकत बना सकता है। क्योंकि प्यार, सम्मान और आत्मनिर्भरता के साथ कोई भी जीवन अधूरा नहीं होता।

हौसलों ने रची अनूठी प्रेम कहानी

धर्मदास पाल (35) और रेशमा परमार (32) की प्रेम कहानी किसी प्रेरणा से कम नहीं। दोनों ने अपनी दिव्यांगता को कमजोरी नहीं, बल्कि अपनी ताकत बनाया और समाज के लिए मिसाल पेश की।

धर्मदास: पैरों की उंगलियों से जिंदगी संवारने वाला कलाकार

मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले के पठारी पेठपुरा गांव के रहने वाले धर्मदास पाल जन्मजात दोनों हाथों से दिव्यांग हैं। लेकिन उन्होंने कभी इसे अपनी प्रगति में बाधा नहीं बनने दिया। बारहवीं तक पढ़ाई करने के बाद, वे पैरों की उंगलियों से प्रिंटिंग प्रेस में कुशलता से काम कर रहे हैं और अपने परिवार का सहारा बने हुए हैं।

रेशमा: पोलियो को मात देकर आत्मनिर्भरता की मिसाल

मध्य प्रदेश के धार जिले की शानपुरा पन्नाला की रहने वाली रेशमा परमार मात्र एक वर्ष की उम्र में पोलियो से ग्रसित हो गईं, जिससे उनकी कमर के नीचे का हिस्सा अकाम हो गया। लेकिन उन्होंने इस बाधा को अपने सपनों के आड़े नहीं आने दिया। वे अपने घर के सभी काम निपुणता से करती हैं और आत्मनिर्भर जीवन जी रही हैं।

व्हाट्सएप पर जुड़ी दो आत्माएं, जो बनीं जीवनसाथी

धर्मदास और रेशमा की मुलाकात एक व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से हुई, जो दिव्यांग व्यक्तियों के लिए बनाया गया था। धीरे-धीरे उनकी बातचीत बढ़ी और यह दोस्ती एक गहरे रिश्ते में बदल गई। एक-दूसरे के संघर्षों को समझते हुए उन्होंने साथ जीवन बिताने का निर्णय लिया।

संस्थान ने पूरी की शादी की अधूरी ख्वाहिश

छह महीने पहले उनके परिवारों ने इस रिश्ते को स्वीकार किया, लेकिन आर्थिक तंगी के कारण विवाह संभव नहीं हो पा रहा था। ऐसे में नारायण सेवा संस्थान ने इनकी शादी का बीड़ा उठाया और 8-9 फरवरी को निःशुल्क सामूहिक विवाह समारोह में इनका विवाह सम्पन्न हुआ।

अब हम अधूरे नहीं, एक-दूसरे के पूरक हैं

शादी के बाद धर्मदास ने कहा:

मैंने हमेशा सोचा था कि मेरी जिंदगी में कोई नहीं होगा, लेकिन रेशमा ने मुझे दिखाया कि प्यार दिव्यांगता नहीं देखता, बल्कि आत्मा का जुड़ाव देखता है।

रेशमा ने मुस्कुराते हुए कहा:

धर्मदास ने मुझे यह एहसास दिलाया कि मजबूरियां नहीं, हौसले हमारी पहचान हैं। अब हम अकेले नहीं, बल्कि एक-दूसरे के संबल हैं।

एक मिसाल, जो हजारों को देगा हौसला

धर्मदास और रेशमा की यह कहानी सिर्फ एक विवाह नहीं, बल्कि एक संघर्ष, प्रेम और आत्मनिर्भरता की मिसाल है। यह उन सभी को प्रेरणा देती है जो अपने सपनों को दिव्यांगता के कारण अधूरा समझते हैं। क्योंकि प्यार और संकल्प के सामने कोई भी बाधा टिक नहीं सकती।

प्रयागराज में संस्थान का दिव्यांग कल्याण शिविर

सेवा, समर्पण और संवेदना की मिसाल

महाशिवरात्रि (26 फरवरी) को सम्पन्न हुए महाकुंभ मेले में, जहां श्रद्धालु मोक्ष की कामना लेकर पहुंचे, वहीं नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगों के सशक्तिकरण और निर्धनों की सहायता के लिए अपना दिव्यांग कल्याण शिविर स्थापित कर सेवा, समर्पण और संवेदना की नई मिसाल कायम की।

धर्म, सेवा और मानवता का संगम संस्थान के संस्थापक निर्वाणी पीठाधिश्वर आचार्य महामंडलेश्वर पद्मश्री अलंकृत पूज्य कैलाश जी 'मानव' के आशीर्वाद और संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया के नेतृत्व में यह भव्य शिविर आरंभ हुआ। गंगा, यमुना और सरस्वती के पावन संगम में डुबकी लगाने के बाद सैकड़ों साधकों और दानवीरों ने सेवा कार्यों की शुरूआत की।

जरूरतमंदों के लिए सेवा की गंगा

◆अन्नदान और भंडाराः श्रद्धालुओं और साधु-संतों के लिए दूध, हलवा, तिल लड्डू, पूरी-सब्जी, मिठाई, खिचड़ी, दाल-रोटी का विशाल भंडारा आयोजित किया गया, जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

◆कंबल वितरणः कड़ाके की ठंड में कांपते 25,000 से अधिक जरूरतमंदों और साधु-संतों को गर्म कंबल वितरित किए गए।

◆निःशुल्क कृत्रिम अंग और सहायक उपकरणः सैकड़ों दिव्यांगजनों को ट्राई साइकिल, व्हीलचेयर, बैसाखी और कृत्रिम अंग प्रदान किए गए, जिससे उनके जीवन में एक नई रोशनी आई।

◆निःशुल्क आवासः प्रत्येक दिन 400 से अधिक लोगों को रात्रि विश्राम के लिए निःशुल्क आवास सुविधा दी गई।

दिव्यांगजनों के लिए विशेष सुविधाएं

संस्थान ने महाकुंभ में विशेष कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला और फिजियोथेरेपी केंद्र भी स्थापित किया, जिससे दुर्घटनाओं में अपाहिज हुए लोगों को फिर से अपने पैरों पर खड़े होने का अवसर मिला।

साधु-संतों का आशीर्वाद

शिविर का उद्घाटन निर्वाणी अनी अखाड़ा, दिगंबर अनी अखाड़ा और खाकी अनी अखाड़ा के सैकड़ों संतों के आशीर्वाद से हुआ। धर्मध्वजा पूजन के पावन अवसर पर श्रीमहंत मुरलीदास जी महाराज (निर्वाणी अनी अखाड़ा), श्रीमहंत मोहनदास जी महाराज (खाकी अनी अखाड़ा), श्रीमहंत रामकिशोर दास जी महाराज (दिगंबर अनी

अखाड़ा), महंत सत्यदेवदास जी महाराज, नंदराम जी महाराज, डॉ. महेशदास जी, वैष्णवदास जी महाराज सहित सैकड़ों संतों ने सेवा कार्यों का आशीर्वाद दिया।

मौनी अमावस्या पर विशेष सेवा कार्य

- भोर में दूध, पकौड़ी और खिचड़ी का वितरण।
- 25,000 से अधिक कंबलों का वितरण।
- रात्रि भर भंडारे का आयोजन, जिसमें 10,000 से अधिक श्रद्धालुओं ने भोजन ग्रहण किया।
- 70 सदस्यीय सेवा टीम का योगदान।

इस पूरे आयोजन में संस्थान की 70 सदस्यीय सेवा टीम ने 24 घंटे निःस्वार्थ सेवा में जुटकर दिव्यांगों और जरूरतमंदों को सहायता प्रदान की। संस्थान के अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया, निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल, सुश्री पलक जी अग्रवाल, ट्रस्टी देवेंद्र जी चौबीसा के नेतृत्व में यह 7वां कुंभ सेवा शिविर था, जो दिव्यांगों और निर्धनों के लिए समर्पित था।

गतिमान हुए ठहरे कदम

नारायण सेवा संस्थान के तत्वावधान में जनवरी-फरवरी माह के दौरान आगरा, सिलीगुड़ी, बैंगलुरू सहित देश के विभिन्न शहरों में नारायण लिंब एवं कैलिपर्स माप तथा फिटमेंट शिविर आयोजित किए गए। इन शिविरों में उन दिव्यांग भाई-बहनों को कृत्रिम अंग प्रदान किए गए, जिन्होंने हादसों में अपने हाथ-पैर गंवा दिए थे। कृत्रिम अंग पाकर उनकी ठहरी हुई जिंदगी फिर से गतिमान हो उठी, और उनकी खुशी का ठिकाना न रहा।

सिलीगुड़ी 12 जनवरी को बर्धमान रोड स्थित शिवम पैलेस में नारायण लिम्ब एवं कैलिपर्स फिटमेंट शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 160 दिव्यांगजनों को अपर-लोअर कृत्रिम अंग और कैलिपर्स लगाए गए।

मुख्य अतिथियों की प्रेरणादायक उपस्थिति इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक डॉ. शंकरलाल घोष और एसडीओ अवध जी सिंघल ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। ◆विधायक डॉ. शंकरलाल घोष ने कहा, संस्थान केवल दिव्यांगों की जिंदगी नहीं बदल रहा, बल्कि समाज को भी प्रेरित कर रहा है कि हम भी कुछ अच्छा करें। ◆एसडीओ अवध जी सिंघल ने आभार व्यक्त करते हुए कहा, संस्थान राजस्थान से चलकर पश्चिम बंगाल में सेवा देने आया है, यह अत्यंत सराहनीय है। हम दिव्यांगों के कल्याण के लिए हरसंभव मदद करेंगे।

अन्य विशिष्ट अतिथि सीआरपीएफ मेडिकल डीआईजी विनोद कुमार जी, उत्तरबंगा मारवाड़ी सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष गंगाधर नकीपुरिया जी, श्री राम सेवा परिवार के अध्यक्ष मुकेश जी कुंभट, समाजसेवी संजय जी टिबरेवाल, सुभाष जी कुंभट, पृथ्वीराज जी अग्रवाल, सुभाष जी अग्रवाल, गुरमीत सिंह जी सलूजा और रमेश जी अग्रवाल, शिविर प्रभारी श्री अचल सिंह भाटी ने मंचासीन अतिथियों का मेवाड़ी परंपरा से स्वागत किया। शिविर संयोजक श्री ऐश्वर्य त्रिवेदी ने संस्थान की सेवा यात्रा 'एक मुट्ठी आटे से दिव्यांगों के पुनर्वास तक' का भावपूर्ण विवरण प्रस्तुत किया।

शिविर की मुख्य विशेषताएं

◆160 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग और कैलिपर्स प्रदान किए गए।

◆6 दिव्यांगों को निःशुल्क व्हीलचेयर, 10 को बैसाखी और 6 को वॉकर वितरित किए गए।

◆दिव्यांगजनों ने कृत्रिम अंग पहनकर परेड की, जो उनकी आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदमों की झलक थी।

आगरा 19 जनवरी को त्रिवेणी ग्रीन्स, फतेहाबाद रोड, आगरा (उत्तर प्रदेश) में नारायण लिंब एवं कैलिपर्स फिटमेंट शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 468 से अधिक दिव्यांगजनों को अपर-लोअर एवं मल्टीपल कृत्रिम अंग और कैलिपर्स प्रदान किए गए।

दिव्यांगों के आत्मविश्वास को मिला नया संबल

शिविर के मुख्य अतिथि समाजसेवी श्री नरेन्द्रपाल सिंह जी ने कहा, नारायण सेवा संस्थान केवल दिव्यांगों को सशक्त नहीं कर रहा, बल्कि उनके खोए हुए आत्मविश्वास को लौटाने और निराशा को दूर करने का भी कार्य कर रहा है। इसी सोच और भावना से ही 'वसुधैव कुटुंबकम' का सपना साकार हो सकता है। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री जे.पी. अग्रवाल, सुरेश चंद्र अग्रवाल, दास बृजेंद्र जी और राकेश कुमार श्रीवास्तव मंचासीन थे।

संस्थान के अथक प्रयासों का परिणाम

शिविर का शुभारंभ संस्थान के महागंगोत्री हेड श्री रजत गौड़ द्वारा किया गया। उन्होंने बताया कि 17 नवंबर को आगरा में ही एक कैंप लगाकर इन 468 दिव्यांगजनों का चयन कर माप लिया गया था। आज, उन्हें नई जिंदगी का उपहार मिल रहा है।संस्थान की तकनीकी टीम ने 184 नारायण लिंब और 180 कैलिपर्स दिव्यांगजनों को लगाए। यह कृत्रिम अंग न केवल उनके जीवन को गतिशील बना रहे हैं, बल्कि उनके आत्मनिर्भरता के सपने को भी साकार कर रहे हैं। इस आयोजन में शिविर प्रभारी हरि प्रसाद जी लड्ढा और आश्रम प्रभारी राजमल जी शर्मा ने दिव्यांगजनों की सेवा में समर्पित भाव से कार्य किया और अंत में सभी का आभार प्रकट किया।

संस्थान का संदेश: 'सपनों को उड़ान देने का संकल्प'

नारायण सेवा संस्थान के इस शिविर ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया कि संकल्प और सेवा की भावना से दिव्यांगता को पराजित किया जा सकता है। यह पहल उन सैकड़ों लोगों के लिए एक नई रोशनी लेकर आई, जिनके ठहरे कदम अब नए जोश के साथ जीवन की ओर बढ़ रहे हैं।

झीनी झीनी रोशनी-69

जीवन पथ पर अविराम यात्रा

दोपहर के भोजन के लिए कैलाश जी को एक घंटे की छुट्टी मिलती थी, लेकिन उन्होंने इस समय का उपयोग भोजन के बजाय प्रवचन सुनने में करने का निश्चय किया। जिस होस्टल में वे रहते थे, प्रवचन स्थल उसके पास ही था। अब वे रोज वहां जाने लगे। भूख लगती तो साथ में चना-चबैना रखते और उसी से पेट की ज्वाला शांत करते। स्वामी सत्यमित्रानंद जी के प्रवचनों ने कैलाश जी के हृदय में नई आशा, नई ऊर्जा और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का संचार किया। स्वामी जी की वाणी में एक अद्भुत शक्ति थी, जो जीवन को सार्थक दिशा में ले जाने के लिए प्रेरित करती थी।

गंगा की अविरल धारा: थकान को हराने का मंत्र

स्वामी जी ने एक बार प्रवचन में कहा: जब कभी जीवन में थकान महसूस हो, जब कभी यह लगे कि बहुत कर लिया, अब विश्राम कर लें, तब अपनी आँखें बंद करो और माँ गंगा का चित्र अपने अंतर्मन में बनाओ। सोचो कि गंगा माता कभी रूकी नहीं, कभी थकी नहीं, कभी विश्राम नहीं लिया। तो क्या हम भी जीवन के अंतिम क्षण तक बिना रूके, बिना थके सत्कर्म नहीं कर सकते। इस वाक्य ने कैलाश जी के जीवन की समूची पद्धति ही बदल दी। उनके भीतर अविरल प्रवाह, न रूकने, न थकने, न हार मानने की एक नई प्रेरणा जाग उठी। वे अक्सर सोचते कि यदि जीवन में सतत प्रेरणा देने वाला कोई हो, तो यह यात्रा कितनी आनंदमय हो सकती है।

शांतिकुंज से आत्मिक जुड़ाव

हरिद्वार में पं. श्रीराम शर्मा द्वारा स्थापित शांतिकुंज समय-समय पर विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करता था। जबलपुर में प्रशिक्षण के दौरान कैलाश जी की भेंट शांतिकुंज के एक जीवनदानी स्वयंसेवक से हो गई। कैलाश जी एक कार्य से बाहर गए थे, वहां लोगों की लंबी कतारें लगी हुई थीं।

कतार में खड़े एक व्यक्ति के कंधे पर शांतिकुंज, हरिद्वार लिखा हुआ झोला टंगा था। इसे देखकर कैलाश जी का मन कौतूहल से भर गया। वे उस व्यक्ति के पास पहुंचे और अपनी उत्सुकता जताई। पता चला कि वह शांतिकुंज की युग निर्माण योजना से जुड़ा हुआ था। उसके परिवार का कलकत्ता में अच्छा-खासा व्यवसाय था, फिर भी उसने अपना पूरा जीवन समाज सेवा में समर्पित कर दिया था।

वह स्वयं एक अच्छी नौकरी पर था, लेकिन उसने सुख-सुविधाओं को त्यागकर मानव सेवा को अपना मिशन बना लिया था। यह जानकर कैलाश जी अत्यधिक प्रभावित हुए।

इस जीवनदानी स्वयंसेवक की कहानी ने कैलाश जी को और भी गहराई से सोचने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने महसूस किया कि सच्ची खुशी त्याग और सेवा में ही निहित होती है। जीवन का असली अर्थ केवल संपत्ति अर्जन या व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाने में है।

स्वामी सत्यमित्रानंद के प्रवचनों से मिली प्रेरणा और शांतिकुंज के सेवक की त्यागमयी जीवनशैली ने कैलाश जी के हृदय में एक अदम्य संकल्प जगा दिया। अब कैलाश जी की जीवन-यात्रा केवल उनके अपने लिए नहीं रही। उन्होंने ठान लिया कि जीवन की हर सांस किसी उद्देश्य के लिए होगी, हर कर्म समाज के लिए होगा और हर क्षण सार्थकता से भरा होगा।

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

पाली
श्री कान्तिलाल मूथा,07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़

भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
09829769960 C/o नीलकण्ठ पेपर स्टोर,
L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा-311001

बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी,09887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने
बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला,मो. 8952859514,
लॉर्डज फैशन पॉईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड
के सामने यादव धर्मशाला के पास,
बहरोड़, अलवर

अलवर
श्री आर.एस. वर्मा, 07300227428
के.वी. पब्लिक स्कूल,
35 लादिया,बाग अलवर

जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,09828242497
5-C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़
रोड़,झोटवाड़ा, जयपुर 302012

अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,09166190962
कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे,
मदनगंज,किशनगढ़, अजमेर

बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,09829960811,
ए.14, 'गिरधर-धाम', न्यू मानसरोवर
कॉलोनी, चित्तौड़ रोड़, बून्दी

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन
मो.-09113733141
C/o पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान
केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली,
हजारीबाग

रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992262641
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट
राजीव सिनेमा रोड़,
बिजुलिया, रामगढ़

धनबाद
श्री गोपाल कुमार खंडिया,
9608529923, आजाद नगर
भूलीनगर

मध्य प्रदेश

रतलाम
श्री चन्द लाल गुप्ता
मो. 9752492233,मकान नं. 344,
काटजूनगर, रतलाम

जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी,मो. 9926660739
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन
सिटी,माढ़ाताल, जिला - जबलपुर

भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136, ए-3/302, विष्णु
हाईटेक सिटी, अहमदपुर
रेल्वे क्रॉसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ,
होशंगाबाद रोड़ जिला - भोपाल

बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,08989609714,
बखतगढ़, त.-बदनावर,जि.-धार

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी, मो.नं. - 9422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला

परभणी
श्रीमती मंजु दरड़ा-मो. 09422876343

नांदेड़
श्री विनोद लिंबा राठोड,07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम,मु. पो. सारखानी,
किनवट, जिला - नांदेड़

पाचोरा
श्री सीताराम जी-मो. 9422775375

मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी,न.-028847991
9029643708,10-बी/बी, वाईसराय
पार्क,ठाकुर विलेज कान्दीवली,मुम्बई

भायंदर
श्री कमलचंद लोढा, मो. 8080083655
ए/103, 'देव आंगन' जैन मन्दिर रोड़
बायन जिनालय मन्दिर के पास,
भायंदर (पश्चिम) ठाणे-401101

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट - बिघरी, त. बदसर
जिला हमीरपुर - 176040

श्री रसील सिंह मनकोटिया
मो. 09418061161, जामलीधाम,
पोस्ट-रोपा, जिला-हमीरपुर-177001

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807,गर्ग
मनोरोग एवं दांतों का हस्पताल के अन्दर
पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662-3
68-ए, नई अनाज मंडी, कैथल

जुलाना मण्डी
श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878,108
अनाज मण्डी, जुलाना,जींद

पलवल
श्री वीर सिंह चौहान
मो.9991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी,
सेक्टर-14, पलवल

फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी
स्टोर, दुकान नं. 1डी/12,
एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा

करनाल
डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
ओपीपी. गली नंबर 19, गोविंद
डेयरी मेन रोड़ करण विहार
नियर मेरठ रोड
करनाल 132001

अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930548
मकान नं.- 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी,
अम्बाला केन्ट-133001

नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014
165-हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
नरवाना, जींद

गोवा

गोवा
श्री अमृत लाल दोषी,मो. 07798917888
'दोषी निवास' जैन मन्दिर के पास,
पजीफोन्ड, मडगांव गोवा-403601

गुजरात

अहमदाबाद
श्री योगेन्द्र प्रताप राघव,मो. 09274595349
म.नं.: बी-77, गोल्डन बंगलो, नाना
चिलोड़ा, अहमदाबाद

उत्तर प्रदेश

बरेली
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074,विकास पब्लिक
स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई)
जिला-बरेली

श्री विजय नारायण शुक्ला
मो. 7060909449,मकान नं.22/10,
सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी
बरेली

हाथरस
श्री दास बृजेन्द्र,मो.-09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन,सादाबाद

हापुड़
श्री मनोज कंसल मो.-09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस,कबाड़ी बाजार,हापुड़

गजरौला, अमरोहा
श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा
मो.-08791269705
बांके बिहारी सदन, कालरा स्टेट,
गजरौला, अमरोहा-244235

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल,मो. 09425536801

श्री देवनाथ साहू,मो. 09229429407
गांव- बेला कछार, मु.पो. बालको
नगर, जिला-कोरबा

बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,मो.-09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2,
शान्ति नगर, बिलासपुर

बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000,रामदेव चौक
बालोद, जिला-बालोद

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,मो. 09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52-सी
अपर शिव शक्ति नगर जम्मु-180001

दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा-8447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा-9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
IV/1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क,
D.C.B. ऑफिस के पास,शाहदरा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

महाराष्ट्र

मुम्बई
09529920090,07073452174
09529920088 फ्लेट नं. 5/ई
सुनील कुमार डोकानिया, न्यु ओस्वाल ओनिक्स, जैसल पार्क, भायन्दर ईस्ट थाने, 401105

पूणे
09529920093
17/153 मेन रोड, गणेश सुपर मार्केट गोखले नगर, पूणे-16

राजस्थान

जोधपुर
08306004821
जूनी बागर, महामन्दिर जोधपुर (राज) 342001

कोटा
07023101172
नारायण सेवा संस्थान, मकान नं.2-बी-5 तलवंडी, कोटा (राज.) 324005

मध्य प्रदेश

ग्वालियर
07412060406, 41 ए ,न्यू शांति नगर, त्रिवेदी नर्सिंग होम के पीछे,नई सडक, लश्कर,ग्वालियर 474001

हरियाणा

गुरूग्राम
08306004802, हाउस नं.-1936 जीए,गली नं.-10,राजीव नगर ईस्ट, माता रोड़, सी.आर.पी.एफ. कैम्प चौक,गुरुग्राम -122001

हिसार
9257017593,मकान न. 2249, सेक्टर-14,हिसार 125005

(कर्नाटक)

बेंगलुरू
09341200200,नारायण सेवा संस्थान 40 (12) प्रथम फ्लोर, मॉडल हाउस कॉलोनी, अपोजिट समना पार्क, एनआर कॉलोनी, बसवानगुडी, बेंगलुरु-560004

बिहार

पटना
मकान नं.-23, किताब भवन रोड नॉर्थ एस.के. पुरी, पटना-13

वेस्ट बंगाल

कोलकाता
09529920097,मकान नं.- 216, बांगुर एवेन्यु, ब्लॉक-बी, ग्राउण्ड फ्लोर, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) पिन कोड-700055

उत्तर प्रदेश

मेरठ
08306004811, 38, श्री राम पैलेस, दिल्ली रोड,नियर सब्जी मंडी, माधव पुरम,मेरठ 250002

लखनऊ
09351230395,09351230393
फ्लेट नम्बर 202,गुरुकृपा अपार्टमेंट न्यू श्रीनगर आलमबाग लखनऊ 226005 (उ.प्र.)

पंजाब

लुधियाना
07023101153
381/382, बी-17, गुलाटी डांस क्लास के पास, भारत नगर, लुधियाना 141001

चण्डीगढ़
7073452176, 8949621058
मकान नंबर 3468 ग्राउंड फ्लोर, सेक्टर - 46-सी, चंडीगढ़-160047

असम

गुवाहाटी
9529920089,मकान नं. 07, भुबन भर्य पथ, सीपीडब्ल्यूडी कार्यालय के सामने, चंद्रमुख सत्रिया अकादमी के पास, पोस्ट-चामुनी मैदान, कामरूप मेट्रो, गुवाहाटी (असम) 781009

गुजरात

सूरत
09529920082,
27, सम्राट टाऊनशिप,सम्राट स्कूल के पास, परवत पाटीया, सूरत

वडोदरा
9529920081
म. नं.: 1298, वैकुंठ समाज, श्री अम्बे स्कूल के पास, वाघोडिया रोड, वडोदरा -390019

अहमदाबाद
9529920080, 8306008208
7/ए कपील कुंज सोसायटी विजय नगर के पास, मेट्रो स्टेशन नारंगपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) 380016

दिल्ली

रोहिणी
08588835718,
08588835719, बी-4/232
शिव शक्ति मंदिर के पास,सेक्टर-8 रोहिणी, दिल्ली -110085

जनकपुरी, नई दिल्ली
07023101156, 07023101167
सी2/287, 4 फ्लोर, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

विकासपुरी, नई दिल्ली
09257017592,मकान नं. 342 ब्लॉक-सी, मद्रासी मन्दिर के पास विकासपुरी 110018

नारायण निःशुल्क फिजियोथेरैपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस
07023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे, अलीगढ़ रोड, हाथरस

मथुरा
07073474438, नारायण सेवा संस्थान 68-डी, राधिका धाम के पास, कृष्णा नगर, मथुरा 281004

अलीगढ़
07023101169,एम.आई.जी. -48 विकास नगर, आगरा रोड,अलीगढ़

मध्य प्रदेश

इन्दौर
09529920087,12, चन्दलोक कॉलोनी खजराना रोड, इंदौर-452018

छत्तीसगढ़

रायपुर
07869916950,मीरा जी राव, म.नं.-29/ 500 टीवी टावर रोड, गली नं.-2, फेस-2 श्रीरामनगर,पो.-शंकरनगर,रायपुर,छ.ग.

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद
07073474435
श्रीमती शीला जैन निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेंटर,बी.-350 न्यू पंचवटी कॉलोनी, गाजियाबाद -201009

लोनी
07023101163
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर, 72 शिव विहार, लोनी बन्थला, चिरोड़ी रोड (मोक्षधाम मन्दिर) के पास लोनी, गाजियाबाद

आगरा
07023101174
मकान न. 8/153, ई-3, न्यू लॉयर कॉलोनी, पानी की टंकी के पीछे, आगरा (उत्तर प्रदेश)

गुजरात

राजकोट
09529920083, बी-33, शिव शक्ति कोलोनी, जेटको टावर के सामने, यूनिवर्सिटी रोड, राजकोट 360005

उत्तराखण्ड

देहरादून
07023101175, साई लोक कॉलोनी, गांव कार्बरी ग्रांट,शिमला बाय पास रोड, देहरादून 248007

दिल्ली

फतेहपुरी
08588835711, 07073452155
6473 कटरा बरियान, अम्बर होटल के पास, फतेहपुरी,दिल्ली-6

शाहदरा
बी-85, ज्योति कोलोनी, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा

हरियाणा

अम्बाला
07023101160,सविता शर्मा, 669, हाऊसिंग बोर्ड कोलोनी अरबन स्टेट के पास, सेक्टर-7 अम्बाला

कैथल
8696002432,7023101166, फ्रेंड कॉलोनी, गली नम्बर 3 करनाल रोड, हनुमान वाटिका के पास कैथल (हरियाणा)

राजस्थान

जयपुर
9529920089, बद्रीनारायण वैद फिजियोथेरेपी हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर बी-50-51 सनराईज सिटी,मोक्ष मार्ग, निवारू झोटवाड़ा,जयपुर

तेलंगाना

हैदराबाद
09573938038,लीलावती भवन, 4-7-122/123 इसामिया बाजार, कोठी , संतोषी माता मंदिर के पास,हैदराबाद -500027

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव, वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पूण्यात्माओं की पुण्यतिथी को बनाएं यादगार....

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 रू.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रू.
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 रू.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रू.
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 रू.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रू.
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 रू.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रू.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रू.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रू.

दो जून की रोटी के लिए बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37,000 रू.
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रू.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रू.
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 रू.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
तिपहिया साईकिल	5,000 रू.	15,000 रू.	25,000 रू.	55,000 रू.
व्हील चेयर	4,000 रू.	12,000 रू.	20,000 रू.	44,000 रू.
कैलिपर	2,000 रू.	6,000 रू.	10,000 रू.	22,000 रू.
वैशाखी	500 रू.	1,500 रू.	2,500 रू.	5,500 रू.
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रू.	30,0000 रू.	50,0000 रू.	1,10,000 रू.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रतिशिक्षण सौजन्य राशि	
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 7,500 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 22,500 रू.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 37,500 रू.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 75,000 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 1,50,000 रू.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 2,25,000 रू.

शिक्षा से वंचित आदिवासी बच्चों को शिक्षित करने मे करें मदद

एक बालक का 1 माह का शिक्षा सहयोग	1,100 रू.
एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000 रू.
एक बालक का आजीवन पालनहार सहयोग (6 से 18 वर्ष)	1,00,000 रू.

Donate via UPI

Google Pay PhonePe Paytm

narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

नेचुरोपेथी

नारायण महावीर प्राकृतिक चिकित्सालय

अभी बुक करें

प्रकृति ही हमारी सच्ची स्वास्थ्य रक्षक है

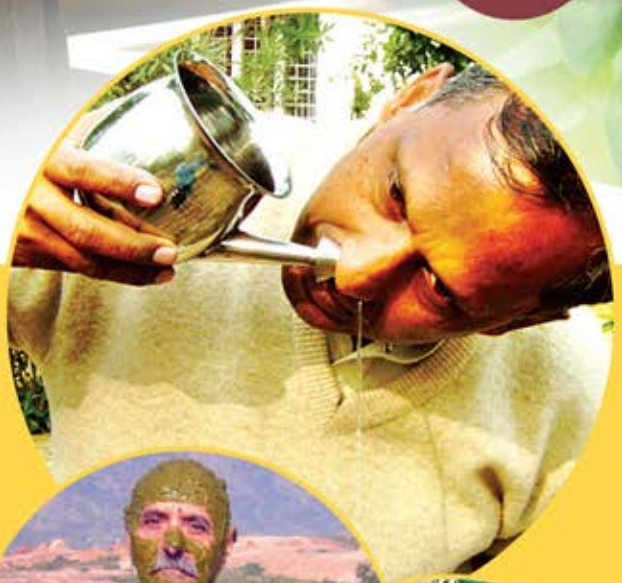

» पूर्णतः प्राकृतिक वातावरण में प्राकृतिक चिकित्सा विधि से नाना प्रकार के रोगों का इलाज ।
» चिकित्सालय में भर्ती होने वाले रोगियों की दिनचर्या प्राकृतिक चिकित्सक के निर्देशानुसार निर्धारित होती है।
» रोगियों को उनकी स्वास्थ्य समस्याओं के अनुसार आहार-चिकित्सा दी जाएगी।
» आवास एवं भोजन की सुव्यवस्था।

असाध्य रोगों से ग्रस्त उन महानुभावों को आरोग्य प्रदान कर रहा है जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों से निराश हो चुके थे तथा इन रोगों को अपनी नियती मानकर अभिशप्त जीवन जी रहे थे। ऐसे ही निराश महानुभावों को संस्थान में पधार कर स्वास्थ लाभ लेने हेतु सादर आमंत्रण है।

सम्पर्क करे :
+91-294-6622222, 7023509999

»»»» नेचुरोपैथी के साथ योगा थेरेपी एवं एडवांस एक्यूपंक्चर थेरेपी भी उपलब्ध है।

अन्तर्राष्ट्रीय सेवा अवार्ड समारोह-2025

दिनांक: 30 मार्च, 2025
समय: सायं: 4 बजे से

स्थान: सेवामहातीर्थ, लियो का गुड्डा, बड़ी, उदयपुर

Seva Soubhagya Print Date 1 March, 2025 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404 Postal Reg. No. RJ/UD/29-146/2023-2025. Despatch Date 1st to 7th of every month, Chetak Circle Post Office, Udaipur, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur - 313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages- 24 (No. of copies printed 1,50,000) cost- Rs.5/-